

हर तरफ हर जगह हर कहीं पे है

हर तरफ, हर जगह, हर कहीं पे है,
हा.. उसी का रूप...
हा उसी का रूप
रौशनी का कोई दरिया तो है,
हा कहीं पे जरूर..
रौशनी का कोई दरिया तो है
हा कहीं पे जरूर

ये आसमान, ये ज़मी, चांद और सूरज
क्या बना सका है कभी कोई भी कुदरत..
कोई तो है जिसके आगे है आदमी मजबूर..
हर तरफ, हर जगह, हर कहीं पे है
हा.. उसी का रूप

इंसान जब कोई है राह से भटका
इसने दिखा दिया, उसको सही रास्ता..
कोई तो है जो करता है मुश्किल हमारी दूर..
हर तरफ, हर जगह, हर कहीं पे है
हा.. उसी का रूप
रौशनी का कोई दरिया तो है
हा कहीं पे जरूर |

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1513/title/har-taraf-har-jagah-har-kahi-pe-hai-usi-ka-roop-with-Hindi-lyrics-by-Shreya-Ghosal>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |